

DPN 6461

Title :

शानैश्चरस्तोत्र

SANAIŚCARASTOTRA

Run. No. 7186

Cat. No. 303

Micro. No.

Subject *Stotra*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 18.5 X 6

Folios 4
(27-30)

Lines (in a page) 5

Compl. / ☒ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. : The available folios are 27-30

Material : palmleaf / ☒ paper / thyasaphu /

Condition : ☒ fine / damaged by worms, rats, water / *Both sides yellow*

Beginning, colophon, post-colophon :

*Fol. 27a: ध्यात्वा सरस्वती देवि गणनाथं विनायकं।
राजा देशलघुस्तोत्रं शौरिदमथाकरोत् ॥*

*Fol. 28a: शानैश्चराय
नमोस्तु ते ॥*

नमः ॥ रुद्राचारं कृत्वा जलिः ॥ आत्मा स न स्वमीद विः
 गदानाथं विनायकं ॥ वाङ्मादं जलथं स्फूर्तिः ॥ (१) न विद
 मथाकं भागु ॥ ४ ॥ नमः ॥ रुद्राय नीलायः ॥ मिथिकं ० नि
 रुद्राय च ॥ नमो नीलमयः ॥ नमो नीलमयः ॥ नित्रात्यल निरुद्रायः
 नमो निमो स द रुद्राय ॥ दीधमः ॥ नमो नीलमयः ॥ नमो विष्णवे

न गाय ॥ शुक्लदल रुयाय च ॥ नमः ४ यू नूष ग्र गाय
 जसू नत्रामाय च वे नमः ॥ नमादि द्योष शुक्लाय ॥ काल
 दक्षि नमासुते ॥ नमस्तु क्काठ वा द्वाय ॥ इ नि वा द्वाय वे न
 मः ॥ नमाध्या नाय नो दाय ॥ रीष नाय क वा लिन ॥ नमस्तु
 सवे शु द्वाय ॥ वलि मू ख नमासुते ॥ नमो मन्द गत नि

२०

र्थः निस्तु साय नमासुते ॥ शु द्वाय नमासुते ॥ रु स्मा गम
 य नमासुते ॥ सूर्य यू गु नमस्तु र्थः ॥ रास्तु न रु य दाय च ॥ अ
 ष्टा दक्षि नमस्तु सुः सर्व न क नमासुते ॥ नमः कालाग्रि नू
 दाय ॥ कृता नाय च वे नमः ४ ॥ नमो नमस्तु र्थः ॥ गनै ष्वना
 य नमासुते ॥ नय साद ग्वद रुयाय ॥ नि र्थ आ गव नाय च ॥ रु

नवद्वनभासुर्य ॥ कास्ययान्मजसूनवः शुष्कानदासिनाय
 केः नृशर्वे रुनसिद्धिना ॥ देवाशुनमनूच्या ॥ यशुय
 दिसलिसृया ॥ त्वयावलाकिनासर्व ॥ नासयनिसमूलन ॥
 वृक्षगकमनूक्षु ॥ मषय ४ सफनानका ॥ नाकृष्टुष्टा ४ य
 नकीरु ॥ नवदृष्टावलाकिना ॥ देवाशुनगलयामा ॥ द्वीया

२६

केः नृशर्वे रुनसिद्धिना ॥ त्वयावलाकिनासर्व ॥ नासयनिसमूलन ॥
 वृक्षगकमनूक्षु ॥ मषय ४ सफनानका ॥ नाकृष्टुष्टा ४ य
 नकीरु ॥ नवदृष्टावलाकिना ॥ देवाशुनगलयामा ॥ द्वीया

न॥ दशनय एवाव॥ अथ यरु निभः ॥ निः विज कायन कस्य
 यन् ॥ दवा सुल मनश्चाना ॥ यद्यु यद्वि सनी लिना ॥ लनिष्ठ
 उवाव ॥ शा गलार्थं गु गुरु रूया ॥ गुरु पीज क न मिना ॥ २२
 अथ लयं वल सु र्यं य ४ कोरु कुद द मिभ ॥ त्वया या क
 मिद सु ॥ यय १० व्या निमानवा ॥ उक कालं द्वि का लं वा

विजाम् के मिभ सवे ॥ दवा सु न मनश्चाना ॥ सिद्धि विद्या व
 ना न गमन् ॥ मृनु सु न मिना वायि ॥ ज न विज क ल सु व
 य ४ यन् ॥ गदु या य क ॥ सु वि सु न स मा रुि ग ॥ स मि य गु स
 मरु य ॥ अ नि मा ना रु या म म ४ म द्वि ने गु वि स्य चान ॥ सु १०
 ल न न य ४ यन् ॥ य ४ यि त्वा ज य सु १० ॥ द्वा यि द क

10

5

नी जलिं। न स्य यी जान वे वारुं। कलि आमि कदा वनीं। ग
व न ऊ म ल ग्ग वा द श। स्व न द सा सु च॥ त्य ऊ मि स न नी न
स्य। वि जा यान गुरु स्य व॥ ज न ने व यु का न न। यी ज मू कं ऊ
ग गुरु व न॥ व न द यं गु सं वा य॥ ना जा द श न थ सु दा। न
म ४ रु ना थ मा त्मानं। न म रु त्य ग नि स्थ न ४॥ ग नि नी च स्थ न

३०